❶
ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 44, अंक 10 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 25 जनवरी, 2021 से रविवार 31 जनवरी, 2021
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सम्पादकीय — किसान आन्दोलन में पीछे की विदेशी शक्तियों से सावधान रहना होगा

गणतंत्र दिवस पर अब तक इस दिन परेड में सैन्य टुकड़ियां, अत्याधुनिक हथियार, अलग-अलग राज्यों की झाकियां और लड़ाकू विमान नजर आते हैं। लेकिन इस बार के गणतंत्र दिवस में इन तस्वीरों के साथ हिंसा की तस्वीरें भी दिखी। जिस लाल किले की प्राचीर पर देश का झंडा शान से लहराता दिखाई देता था, उस पर गणतंत्र दिवस जैसे खास दिन पर कुछ प्रदर्शनकारियों ने पंथ सम्प्रदाय का झंडा लहरा दिया। इसके अलावा कई जगह हिंसा और तोड़फोड़ भी हुई। यह सब देखकर हर किसी के मन में शायद कहीं न कहीं ये सवाल जरूर है कि क्या जिस तरह से किसान की मांगों को लेकर पूरा देश एकजुट था, जिस तरफ से उनकी मांगों को देश की मांग माना जा रहा था, जिस तरह से किसानों के आंदोलन को लेकर जय जवान-जय किसान की बात हो रही थी क्या देश अब भी वैसा ही सोच पाएगा?

हाथों में तलवारें, मुंह पर काला कपड़ा, पुलिसवालों पर पथराव और लाल किले पर पंथ का झंडा। ये नजारा था गणतंत्र दिवस पर राजधानी दिल्ली में किसानों के उग्र आंदोलन का। वही आंदोलन, जो पिछले करीब 60 दिनों से देश के कई इलाकों खासतौर से दिल्ली की सीमाओं पर चल रहा है, कभी किसान नेताओं और सरकार की बातचीत की खबर आ रही थी तो कभी देश को किसानों की परेड दिखाने का दंभ भरा जा रहा था।

खैर अब 26 जनवरी 2021 कई तरह याद किया जायेगा - दोपहर तक गणतंत्र दिवस के रूप में उसके बाद उत्पात दिवस के रूप में। चार दिन पहले की खबर थी कि गणतंत्र दिवस पर 26 जनवरी को माओवादी काला दिवस मनाने की फिराक में हैं। अपने प्रभाव वाले क्षेत्र में गणतंत्र दिवस पर झंडोत्तोलन के मौके पर हिंसा फैलाने की उनकी तैयारी है। लेकिन देखते देखते यह आग दिल्ली में फैल गयी ट्रैक्टर रैली की आड़ में कई जगह भारी हिंसा देखने को मिली। एक तरफ प्रदर्शनकारियों द्वारा पुलिस पर हथियारों व लाठियों से हमला करते दिखाया गया। वहीं पुलिस द्वारा हालात को नियंत्रण में लाने के लिए लाठीचार्ज तक करना पड़ा। यही नहीं आलम तो यह रहा कि प्रदर्शनकारी लाल किले पर चढ़ गए और उन्होंने निशान साहिब और किसान संगठनों का झंडा वहां लगा दिया।

अब किसान संगठन सरकार के सिर ठीकरा फोड़ रहे हैं, सरकार किसानों के नेताओं पर। लेकिन इस पूरे खेल के पीछे कुछ और भी है। जहाँ तक गुस्से का सवाल है तो पिछले कुछ दिनों से सरकार के विरुद्ध पंजाबी और देशी लोकगीतों का रुझान

....अब 26 जनवरी 2021 कई तरह याद किया जायेगा - दोपहर तक गणतंत्र दिवस के रूप में उसके बाद उत्पात दिवस के रूप में। चार दिन पहले की खबर थी कि गणतंत्र दिवस पर 26 जनवरी को माओवादी काला दिवस मनाने की फिराक में हैं। अपने प्रभाव वाले क्षेत्र में गणतंत्र दिवस पर झंडोत्तोलन के मौके पर हिंसा फैलाने की उनकी तैयारी है। लेकिन देखते देखते यह आग दिल्ली में फैल गयी ट्रैक्टर रैली की आड़ में कई जगह भारी हिंसा देखने को मिली। एक तरफ प्रदर्शनकारियों द्वारा पुलिस पर हथियारों व लाठियों से हमला करते दिखाया गया। वहीं पुलिस द्वारा हालात को नियंत्रण में लाने के लिए लाठीचार्ज तक करना पड़ा। यही नहीं आलम तो यह रहा कि प्रदर्शनकारी लाल किले पर चढ़ गए और उन्होंने निशान साहिब और किसान संगठनों का झंडा वहां लगा दिया। ......

रहा, ये गीत कहाँ से आ रहे थे? इनके पीछे का मकसद क्या था यह सब 26 जनवरी पर देखने को मिला। क्योंकि 26 जनवरी पर इस बार ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉन्सन आने वाले थे, अचानक उन्होंने मना कर दिया। इसका कारण कोरोना बताया गया। जबकि खेल दूसरा भी कहा जा सकता है जैसे ही बोरिस जॉन्सन के आने की खबरें मीडिया में प्रसारित हुई अचानक संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस के प्रवक्ता और ब्रिटेन के विभिन्न दलों के 36 सांसदों ने भारत में जारी किसानों के प्रदर्शन का समर्थन कर दिया।

- शेष पृष्ठ 2 पर

अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा द्वारा विजय दिवस सम्पन्न

वर्षों पुरानी भूमि को कब्जे से छुड़ाकर होगा शिक्षा का कार्य

स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य समाज आर्य नगर अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा, पहाड़गंज, नई दिल्ली के कुछ हिस्सों पर लगभग 40 वर्ष पूर्व कुछ असामाजिक तत्त्वों द्वारा अवैध रूप से कब्जा कर लिया गया था। स्व. डॉ. बलराम राणा जी के अथक प्रयासों व 40 वर्षों के लम्बे व कड़े कानूनी संघर्ष पर पूर्ण विराम लगाते हुए माननीय न्यायालय द्वारा दिनांक 21 जनवरी 2021 को उस अवैध रूप से कब्जा किये गये हिस्से को हमने प्राप्त कर लिया।

इस ऐतिहासिक अवसर पर दिनांक 24 जनवरी 2021 रविवार को आचार्य भद्रकाम वर्णी जी के ब्रह्मत्त्व "विजय यज्ञ" का आयोजन किया गया। जिसमें विशेष आहुतियाँ प्रदान की गई। यजमान श्रीमती वर्षा एवं संजीव कोहली, श्रीमती अंशिका एवं रोहित कपूर, श्रीमती शशि विज, श्री अनूप मल्होत्रा व अन्य सदस्य सम्मिलित हुये।

मुख्य अतिथि के रूप में श्री विनय आर्य जी ने देश में बनें आर्य नगरों के इतिहास पर प्रकाश डाला व कहा कि इस भूमि को हम स्वामी श्रद्धानन्द जी के विचारों के अनुरूप भव्य बनायेंगे तथा कार्य करेंगे। उन्होंने सभा तथा समाज के पूर्व व वर्त्तमान अधिकारियों का धन्यवाद किया, विशेष रूप से स्व. डॉ. बलराम राणा जी व स्व. तिलकराज कोहली जी के प्रयासों का उल्लेख किया तथा सभी कार्यकर्त्ताओं का ओम् पट्टिका से स्वागत किया।

इस अवसर पर ऋषि लंगर व "सहयोग" द्वारा प्राप्त कपड़ों को गरीबों में वितरित किया गया। अन्त में आचार्य भद्रकाम वर्णी जी द्वारा श्री विजय कपूर, श्री जनमेजय राणा, श्री ओम प्रकाश, श्री चन्द्रमोहन कपूर आदि सभी सदस्यों व विद्यालय के समस्त कर्मचारियों का धन्यवाद किया।

- मन्त्री

देववाणी - संस्कृत

वेद-स्वाध्याय

आत्मा पवित्र है !

अरण्योर्निहितो जातवेदा गर्भइव सुधितो गर्भिणीषु।
दिवेदिव ईडयो जागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः।। -ऋक्. 3/29/2
ऋषिः **विश्वामित्रः।।** देवता - **अग्निः।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **जातवेदाः** = ज्ञान व ऐश्वर्य वाला अग्नि **अरण्योः** = अरणियों में **निहितः** = छिपा हुआ होता है और यहा वहाँ **गर्भिणीषु गर्भः इव** = गर्भिणियों में गर्भ की भाँति **सुधितः** = अच्छी प्रकार धारित, सुरक्षित होता है। **अग्निः** = यह अग्निदेव **जागृवद्भिः** = जागनेवाले, ज्ञान युक्त **हविष्मद्भिः** = हविवाले, आत्म त्यागी **मनुष्येभिः** = मनुष्यों द्वारा तो **दिवेदिवे** = प्रतिदिन ही **ईडयः** = पूजित व प्रार्थित होता है।

विनय - तुम कहते हो कि आत्मा दिखाई नहीं देता, पर यदि तुम इसे देखना चाहते हो तो तुम इस आत्माग्नि को प्रज्वलित क्यों नहीं कर लेते? अरणि में या दियासलाई में विद्यमान भौतिक अग्नि भी तो तबतक दिखलाई नहीं देता जबतक कि मन्थन (रगड़ने) प्रणव (ईश्वर नाम) रूपी (दियासलाई की) डिब्बी या उत्तरारणि पर ध्यानरूपी मन्थन करके देखो, तो तुम देखोगे कि तुम्हारा आत्माग्नि चमक उठेगा, जातवेदा जाग उठेगा। अरे! योगरूपी अरणी और स्वाध्यायरूपी उत्तरारणि के सम्बन्ध से तो अन्तः करण में परमात्मा तक प्रकाशित होती है, अतएव इस आत्मज्योति की इस समय इतनी अच्छी तरह रक्षा करनी चाहिए, जैसेकि गर्भिणी स्त्री अपने गर्भ की रक्षा करती है, पर क्या हम अपने इस ज्ञानगर्भ की कुछ रक्षा करते हैं? नहीं, यह सब हम न जानते हुए बड़े भारी गर्भपात के पापभागी हो रहे हैं। जैसे माता-पितारूपी अरणियों से प्रकट हुई सन्तानरूपी अग्नि प्रारम्भ में गर्भावस्था में होती है, वैसे ही हम सब मनुष्य-शरीर पानेवालों के अन्दर जन्म से आत्मज्योति गर्भित रहती है जोकि हममें जीव के मनुष्य-योनि-सम्बन्ध से उत्पन्न हुई है, पर हम लोग इस गर्भित 'सुधित' ज्योति को पालित-पोषति कर बढ़ाने की जगह भोगादि में पड़कर इसे दबा करते हैं! पुण्यात्मा हैं वे पुरुष जो इस गर्भित आत्मज्योति को बढ़ाकर इस द्वारा अपने-आपको जगाते हैं, ज्ञानोपार्जनरूपी समिदा धानों से इस शिशु-अग्नि को प्रज्वलित करते हैं और 'जागृवत्' होते हैं तथा जो घृताहुतिरूपी आत्मबलिदानों को दे-देकर इस अग्नि को प्रचण्ड भी कर लेते हैं, 'हविष्मत्' होते हैं। संसार के महात्माओं को देखो, इन्होंने इसी प्रकार अपने में जातवेदा की चिनगारी को इतना बढ़ाया है कि वे आज सब-कुछ भस्म कर सकने वाले महानल हो गये हैं, महाशक्ति, महात्मा हो गये हैं। ये देखो! जागृवान्, हविष्मान् मनुष्य अपनी इस प्रज्वलित आत्माग्नि का प्रतिदिन भजन-स्तवन कर रहे हैं, इसे और-और बढ़ा रहे हैं। इनके अन्दर ये आत्मदेव निरन्तर ज्ञानों और बलिदानों द्वारा पूजित और पोषित हो रहे हैं, उठो मनुष्यो! तुम भी अपनी आत्माग्नि को बढ़ाओ और जाग्रत् होकर तथा हवि हाथ में लेकर इस आत्माग्नि को नित्य अधिक-से-अधिक प्रदीप्त करते जाओ।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

इससे पहले कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने भी प्रदर्शनकारी किसानों के प्रति समर्थन दोहराया था। यानि जैसा कहा जा रहा था कि आन्दोलन फंडिंग है तो क्या ब्रिटेन की गुप्तचर एजेंसियां जानती थी कि 26 जनवरी पर भारत में बड़ा बवाल होने वाला है और इसी के चलते बोरिस ने अपना दौरा रद्द किया हो? क्योंकि दो महीने से ही ब्रिटेन में स्कूली बच्चे किसानों के प्रदर्शन को लेकर सोशल मीडिया का उपयोग कर रहे थे।

खैर दो महीने से भड़काया जा रहा किसान भड़क गया और जब ट्रैक्टर परेड शुरू हुई तो किसानों ने सबसे पहले सिंघू और टीकरी बॉर्डर पर पुलिस के बैरिकेड तोड़ दिए, इसके बाद हजारों किसान दिल्ली में घुस आए और राजधानी की सड़कों पर किसानों का सैलाब आ गया। जगह-जगह रास्ते जाम हो गए। किसानों का काफिला आईटीओ की ओर बढ़ा और पुलिस पर पथराव करने लगा, पुलिस वाले नालों में कूदकर अपनी जान बचाते दिखे।

यानि किसान वामपंथियों के बनाये चक्रव्यूह में अभिमन्यु की तरह फंसते चले गये और जो-जो वामपंथी चाहते थे वो-वो सब कुछ होता चला गया। इस दौरान एक किसान की मौत हो गई। अब इन सबके बीच सबसे बड़ा सवाल यह उठ रहा है कि दो महीने से भी लंबे समय से चल रहे आंदोलन का क्या होगा?

क्या मंगलवार को हुई हिंसा को आधार बनाते हुए सरकार इस आंदोलन को बंद करवा देगी या फिर किसान आंदोलन खुद ही बिखर जाएगा? कुछ लोग कह रहे है कि अगर पुलिस पहले बल प्रयोग करती तो शायद यह सब नहीं होता। लेकिन तब इस बात की गारंटी कौन देता कि किसान जो विक्टिम कार्ड खेल रहे हैं और कई राजनीतिक दल जो उस विक्टिम कार्ड को राजनीतिक और इंटेलेक्चुअल कवर दे रहें हैं, तब यही लोग पुलिस बल पर आरोप लगा रहे होते। वैसे अब किसान नेता आन्दोलन स्थल छोड़कर जाने लगे हैं।

लेकिन इन सवालों का जवाब ढूंढने के लिए यह जानना जरूरी है कि क्या लोकतंत्र में यह सब कुछ चलता है क्या किसी मांग को मंगवाने के लिए किया गया आंदोलन बिना हिंसा या बिना कोई नुकसान किए मुमकिन है?

क्या अपनी बात को मनवाने के लिए आक्रामक होना जरूरी है? क्यों उग्र आंदोलनों को मांगें मंगवाने का शॉर्टकट माना जाता है? क्या इससे सरकार जल्दी दबाव में आ जाती है। जबकि विश्व भर का और भारत का एक इतिहास रहा है कि यहाँ हमेशा शांतिपूर्ण प्रदर्शन ही कामयाब हुए। लेकिन इसके बावजूद भी भारत में सीएए का विरोध हिंसक हुआ, उससे पहले पटेल आन्दोलन रहा हो, जाट आंदोलन हो, अलग गोरखालेंड की बात हो या मंदसोर का किसान आन्दोलन। दक्षिण भारत में जल्लीकट्टू का भीषण आन्दोलन हुआ हो या तीन तलाक को हर जगह हिंसा का रूप देखने को मिला। जो ममता आज केंद्र की सरकार को ज्ञान बाँट रही है पश्चिम बंगाल में सिंगूर में जमीन अधिग्रहण को लेकर हिंसक आंदोलन हुए, ममता के कारण इस आंदोलन से 75 हजार करोड़ रुपये का नुकसान हुआ था। यानि जब आन्दोलन हिंसक होते हैं तो उसका लाभ-हानि नहीं देखे जाते, इससे उन लोगों का मकसद कामयाब हो जाता है। जो देश की छवि को दुनिया में बदनाम करना चाहते हैं। इस बार भी ऐसा ही हुआ इसलिए गणतंत्र दिवस का दिन चुना गया क्योंकि इस दिन दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के पर्व पर दुनिया की निगाहें रहती हैं।

अब जो होना था हो चुका किसानों की आड़ में उपद्रवी जो चाहते थे कर गये। अब तो सवाल ये है कि किसान नेताओं का अगला कदम क्या होगा उसके बारे में पूरी जानकारी भी जल्दी आ जाएगी। लेकिन इतना जरूर है कि मंगलवार की घटना के बाद उनके सामने कुछ चुनौतियाँ जरूर हैं। किसान यूनियनों का कहना है कि उनका अगला प्लान बजट वाले दिन संसद तक मार्च निकालने का है जिसे फिलहाल रद्द कर दिया गया है। हालांकि मंगलवार की हिंसा के बाद अब कोर्ट और केंद्र सरकार शायद ही उदारता दिखाए। किसान यूनियनों को अब तक कई नोटिस मिल चुके हैं और अब उनसे इस बारे में भी पूछताछ की जा सकती है कि आखिर ट्रैक्टर रैली उनके नियंत्रण से बाहर कैसे हो गई। और पूरे प्रकरण से एक चीज निकलकर सामने आई कि किसान नेताओं ने अपना विश्वास खोया और साथ ही किसानों के प्रति जो आम लोगों की सोच थी जो उन्हें अन्नदाता कहते थे क्या देश अब भी वैसा ही सोच पाएगा? और क्या आन्दोलन अब भी चल पायेगा? - ***सम्पादक***

साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका रजिस्टर का प्रकाशन

आर्यसमाज द्वारा आयोजित साप्ताहिक सत्संगों में यज्ञ सत्संग के दौरान साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका में आर्य महानुभाव अपने-अपने हस्ताक्षर करते हैं जो कि आर्य समाज के उप-नियमों के अनुसार अनिवार्य भी हैं। किंतु कहीं-कहीं पर रजिस्टर के स्थान पर कॉपी अथवा रजिस्टर की स्थिति जीर्ण-शीर्ण होती है। अतः दिल्ली की आर्यसमाजों में उपस्थिति रजिस्टर की एकरूपता हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका-रजिस्टर का प्रकाशन किया है। रजिस्टर की हार्ड बाईडिंग, सुंदर मजबूत कागज, आर्य समाज, दिनांक, पता, उपस्थिति और वक्ता का नाम, फोन नं., विषय आदि सुंदर तरीके से दिए गए हैं जिससे आर्यसमाज के सत्संगों का पूरा रिकार्ड पंजिका में अंकित हो सके।

आप भी अपनी आर्यसमाज का उपस्थिति रजिस्टर तुरन्त बदलें और सभा द्वारा प्रकाशित रजिस्टर को अपनाएं।

आकार 10''×15'' पृष्ठ 104 मूल्य 200/- रुपये मात्र।

-: प्राप्ति स्थान :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) - 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

सम्पर्क सूत्र - 011-23360150, 9540040339

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

एक हास्य व्यंग्य लेख

चप्पे - चप्पे पर डॉक्टर

- डॉ॰ पूर्ण सिंह डबास

जिस भी नजरिए से देखूँ मुझे अपना देश एक प्रधान देश दिखाई देता है। इधर कुछ दिनों से मैंने इसे डाक्टरी दृष्टि से देखना शुरू किया है जिसके परिणाम स्वरूप यह मुझे एक डाक्टर प्रधान देश दिखाई देने लगा है। जब दुनिया के लोग डाक्टर शब्द तक से वाकिफ नहीं थे तब भी हमारे देश में डाक्टरों की भरमार थी जिन्हें हम लोग वैद्य कहते थे। उन दिनों क्योंकि राजाओं का जमाना था इसलिए कुछ वैद्यों को राज वैद्य कहा जाता था और कुछ को वैद्य राज। आज की ताजा हालत यह है कि हमारे पास इन राजवैद्यों और वैद्यराजों के साथ-साथ बड़े-बड़े डाक्टर हैं, हकीम हैं, नीम हकीम है, जादू-टोना विशेषज्ञ हैं, झाड़-फूँक करने वाले हैं और जंतर-मंतर के ऐक्सपर्ट हैं। कुल मिलाकर हमारे पास करोड़ों इलाजिए हैं जिनमें से बहुतों का इलाज शर्तिया इलाज कहा जाता है। इधर हमने इस दिशा में काफी तरक्की करते हुए डाक्टरों की एक नई ब्रांड विकसित की है जिसे झोला छाप डाक्टर कहकर सम्मानित किया जाता है। ये वे डाक्टर हैं जो झोले में दवाई भरकर इलाज के लिए हर समय उपलब्ध रहते हैं। संसार के चिकित्सा जगत को यह हमारी अभूतपूर्व देन है।

इतना ही क्यों, मैं तो दावे से कह सकता हूँ हमारे देश का हर आदमी जन्मजात डाक्टर है। यहाँ का आदमी जीवन भर एड़ी-चोटी का जोर लगाकर वकील, प्रोफेसर, इंजीनियर, या कलाकार न बन पाए लेकिन डाक्टर वह जन्म से ही होता है। मेरी बात पर भरोसा न हो तो बीमार होकर देख लीजिए। आप के पास जो भी संवेदना प्रकट करने आएगा उसके भीतर से आपको एक महान डाक्टर झाँकता दिखाई देगा। बस आप बीमारी का नाम लीजिए और कापी-पेन लेकर नुस्खे नोट करने शुरू कर दीजिए। मिसाल के लिए आप कहिए कि खाँसी-जुकाम है तो तुरंत इलाज हाजिर होगा :

- ⋆ शहद और अदरक का रस दिन में तीन बार चाटिए।
- ⋆ दोनों वक्त काली मिर्च डालकर तुलसी की चाय पीजिए।
- ⋆ मुलहटी चूसते रहिए और गुड़-तेल-खटाई का परहेज कीजिए।
- ⋆ काले बाँसे का काढ़ा पीजिए, दो दिन में ही आराम हो जाएगा।

इसी प्रकार सिर-दर्द, जोड़ों का दर्द, डायबिटीज, ब्लड-प्रेशर तथा आँव-दस्त आदि किसी भी बीमारी का नाम लेते ही आप पर इतने नुस्खे टूट पड़ेंगे कि उन्हें संभालना मुश्किल हो जाएगा। मुझे, क्योंकि कई बार बीमार पड़ने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है इसलिए मैं ये बातें बड़े अधिकार के साथ कह रहा हूँ। इतने सारे विशेषज्ञों और नुस्खों के बावजूद अगर देश से बीमारियाँ नहीं जा रही हैं तो इसे देश की बदकिस्मती ही कहा जा सकता है।

बचपन में, जब मैं भी आपकी तरह निरा बच्चा ही था, तब मुझे पसली चलने की बीमारी थी। इसका यह अर्थ नहीं है कि मेरे हाथ-पाँव नहीं चलते थे। हाथ-पाँव तो चलते ही थे लेकिन पसलियाँ कुछ ज्यादा चलती थी। ऐसी हालत में मेरी पसलियों की सक्रियता की दाद देते हुए अनेक महिलाएँ मेरी माँ और साथ ही मेरे प्रति गहरी संवेदना प्रकट करती रहती थी। इस संवेदना को गहराई प्रदान करते हुए वे बीमारी के नुस्खे भी परोसती रहती थी जो मेरी बाल-बुद्धि में इतनी गहराई से पैठ गए थे कि आज तक जबानी याद हैं। उदाहरण के लिए एक का कथन था कि गाँव के रामधन कुम्हार से बच्चे का पेट मलवा ला, दूसरी का सुझाव था कि रूई गर्म करके छाती सेकती रह, तीसरी ने फरमाया कि हल्दी का धुँआ सुंघा दे, चौथी ने अपने अनुभव का निचोड़ उडेलते हुए कहा कि छाती और पाँव को ढक के रख और च्यवनप्राश खिलाती रह, पाँचवी का फतवा था कि इन से कुछ नहीं होगा। यह प्रेत-बाधा है, मिट्टी की प्लेट में काली मूंग और एक चवन्नी डालकर चौराहे के बीच में रख आ।

इस प्रकार मेरी माँ पर नुस्खों की इतनी बौछार होती थी कि उसका दुखी मन कोई भी निर्णय नहीं ले पाता था। इतने सारे विकल्प उसकी दुविधा बन जाते थे। वह अक्सर मायूस बैठी मेरे सिर को दबाती रहती और छाती को सहलाती रहती।

बीमार पड़ना मेरा पुराना शौक रहा है। बुढ़ापे में जबकि काफी अक्ल आ जानी चाहिए मैं तब भी बीमार पड़ता रहा हूँ। मेरा यह स्वभाव है कि बीमारी के बाद मुझ में कमजोरी आ जाती है। इसी स्वभाव के अनुसार एक बार, बीमारी तो पंद्रह-बीस दिन बिता कर चली गई लेकिन कमजोरी मेरे पास ही रह गई। मेरे बहुत सारे परिचित आते, कमजोरी दूर करने का नुस्खा बताते और विदा हो जाते। वे अपने नुस्खों का ऐसा घनघोर बयान करते थे मानो साक्षात् भगवान ने उन्हें मेरे कल्याण के लिए ही धरती पर भेजा हो। इन हमदर्दों में ताजा-ताजा सेनानिवृत्त हुई एक अध्यापिका भी थी। उस समय बहत्तर वर्ष पार कर चुकी मेरी आयु पर तरस खाकर, उस करुणामयी ने भी कमजोरी दूर करने का एक नुस्खा मेरी सेवा में पेश करते हुए कहा : 'मैं बताऊँ, आप जूस पीया करो।' दुर्बलता विनाशक यह असाधारण और अचूक नुस्खा सुनकर मेरे रोम-रोम से उसके प्रति कृतज्ञता टपकने लगी। मैंने उस चिरपरोपकारिणी के प्रति नतमस्तक होते हुए कहा : 'आपने तो अपने पूरे जीवन का निचोड़ ही मेरे सामने रख दिया। किन शब्दों में आपका धन्यवाद करूँ। मैं तो सोचता था कि आप बच्चों को भाषा पढ़ाती रही हैं लेकिन इस नुस्खे से तो लगता है कि आपने पूरी आयु स्वास्थ्यवर्धन के उपाय खोजने में ही बिताई है। अगर आप इस अत्यन्त गोपनीय नुस्खे को देश के हस्पतालों पर भी प्रकट कर सकें तो राष्ट्रीय स्वास्थ्य के प्रति आपका उल्लेखनीय योगदान होगा। वह तुरंत उठकर चली गई। शायद उसे अपनी प्रशंसा सुनने का शौक नहीं था।

बुढ़ापे में कब्ज रहना एक आम शिकायत है। इसीलिए, सुबह-सुबह मिलने पर आजकल वृद्ध लोग 'क्या हाल-चाल हैं' कि बजाए एक दूसरे से पूछने लगे हैं: 'क्या पेट खुलकर साफ हो गया था? यह उनका एक तरह का अभिवादन है। मैं ऐसे वृद्धों से खुलकर बात नहीं करता। जिनका पेट ही खुलकर साफ न होता हो उनसे खुलकर बात की भी कैसे जा सकती है! लेकिन एक दिन अनजाने में मैंने भी अपनी इस समस्या का जिक्र उस वृद्धमंडली के सामने कर दिया जो योगाभ्यास के नाम पर चोंचाभ्यास करने के लिए पार्क में विराजमान थी। बस जिक्र का होना था कि दूसरी ओर से नुस्खों की ऑटोमैटिक मिसाइलें दागी जानी शुरू हो गई:

- ⋆ थोड़ा हल्का खाना खया करो।
- ⋆ रात को सिर्फ दूध-दलिया या खिचड़ी ही खाओ।
- ⋆ हरी सब्जियाँ खाया करो, कभी समस्या नहीं होगी।
- ⋆ एक टाइम सिर्फ सलाद खाओ।
- ⋆ आजकल बाजार में जो मैदे जैसा बारीक आटा मिलता है उसे छोड़कर मोटे आटे की रोटियां खाना शुरू कर दो।

- शेष पृष्ठ 6 पर

.....इन हमदर्दों में ताजा-ताजा सेनानिवृत्त हुई एक अध्यापिका भी थी। उस समय बहत्तर वर्ष पार कर चुकी मेरी आयु पर तरस खाकर, उस करुणामयी ने भी कमजोरी दूर करने का एक नुस्खा मेरी सेवा में पेश करते हुए कहा : 'मैं बताऊँ, आप जूस पीया करो।' दुर्बलता विनाशक यह असाधारण और अचूक नुस्खा सुनकर मेरे रोम-रोम से उसके प्रति कृतज्ञता टपकने लगी। मैंने उस चिरपरोपकारिणी के प्रति नतमस्तक होते हुए कहा : 'आपने तो अपने पूरे जीवन का निचोड़ ही मेरे सामने रख दिया। किन शब्दों में आपका धन्यवाद करूँ। मैं तो सोचता था कि आप बच्चों को भाषा पढ़ाती रही हैं लेकिन इस नुस्खे से तो लगता है कि आपने पूरी आयु स्वास्थ्यवर्धन के उपाय खोजने में ही बिताई है। अगर आप इस अत्यन्त गोपनीय नुस्खे को देश के हस्पतालों पर भी प्रकट कर सकें तो राष्ट्रीय स्वास्थ्य के प्रति आपका उल्लेखनीय योगदान होगा। वह तुरंत उठकर चली गई। शायद उसे अपनी प्रशंसा सुनने का शौक नहीं था। .....

प्रेरक प्रसंग

देखें तो पण्डित लेखराम को क्या हुआ?

पण्डितजी के बलिदान से कुछ समय पहले की घटना है। पण्डितजी वजीराबाद (पश्चिमी पंजाब) के आर्य समाज के उत्सव पर गये। महात्मा मुंशीराम भी वहाँ गये। उन्हीं दिनों मिर्जाई मत के मौलवी नूरुद्दीन भी वहाँ आर्य समाज के प्रभाव को दूर करने के लिए गये और मुसलमानों को आर्यसमाज के विरुद्ध बहुत भड़काया। यह मिर्जाई लोगों की निश्चित नीति रही है। अब पाकिस्तान में अपने बोये हुए फल को चख रहे हैं। यही मौलवी साहिब मिर्जाई मत के प्रथम खलीफा बने थे।

पण्डित लेखरामजी ने ईश्वर के एकत्व व ईशोपासना पर एक ऐसा प्रभावशाली व्याख्यान को सुनकर उन्हें मिर्जाइयों से घृणा हो गई।

पण्डितजी भोजन करके समाज मन्दिर लौट रहे थे कि बाजार में एक मिर्जाई से बातचीत करने लग गये। मिर्जा गुलाम अहमद अब तक कई बार पण्डित जी को मौत की धमकियाँ दे चुके थे। बाजार में कई मुसलमान इकट्ठे हो गये। मिर्जाई ने मुसलमानों को एक बार फिर भड़काने में सफलता पा ली। आर्यलोग चिन्तित होकर महात्मा मुंशीरामजी के पास आये। वे स्वयं बाजार गये, जाकर देखा कि पण्डित लेखरामजी की ज्ञान-प्रसूता, रसभरी ओजस्वी वाणी को सुनकर सब मुसलमान भाई शान्त खड़े हैं। पण्डितजी उन्हें ईश्वर की एकता, ईश्वर के स्वरूप और ईश की उपासना पर विचार देकर 'शिरक' के गढ़े से निकाल रहे हैं। व्यक्तिपूजा ही तो मानव के आध्यात्मिक रोगों का एक मुख्य कारण है।

यह घटना महात्माजी ने पण्डितजी के जीवन-चरित्र में दी है या नहीं, यह मुझे स्मरण नहीं। इतना ध्यान है कि हमने पण्डित लेखरामजी पर लिखी अपनी छोटी व बड़ी दोनों पुस्तकों में नहीं दी।

यह घटना प्रसिद्ध कहानीकार सुदर्शनजी ने महात्माजी के व्याख्यानों के संग्रह 'पुष्प-वर्षा' में दी है।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चितौड़गढ़ (राजस्थान) में कन्या चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामंत्री जोगेंद्र खट्टर अपनी धर्मपत्नी श्रीमती आरती खट्टर आर्य कन्या गुरुकुल चितौड़गढ़ (राजस्थान) पंहुचे जोकि आदरणीय सोमदेव शास्त्री जी (मुंबई) एवं जीववर्धन शास्त्री जी (मंत्री दयानन्द सेवाश्रम संघ) द्वारा संचालित किया जा रहा है। 25 जनवरी को इस गुरुकुल में आर्य वीरांगना शिविर का भी शुभारम्भ किया गया,जोकि 31 जनवरी तक चलेगा।

इस अवसर पर डॉ. सोमदेव जी ने कहा कि लोगों के जीवन को बेहतर करने के लिए फिर से योग का अभ्यास करने की आवश्यकता है। दैनिक जीवन में योग का अभ्यास शरीर को आन्तरिक और बाहरी ताकत प्रदान करता है। यह शरीर के प्रतिरोधी प्रणाली को मजबूती प्रदान करने में मदद करता है, इस प्रकार यह विभिन्न और अलग-अलग बीमारियों से बचाव करता है। यदि योग को नियमित रूप से किया जाए तो यह दवाईयों का दूसरा विकल्प हो सकता है।

शिविर में बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि अपने आपको इतना सक्षम बनाएं कि स्वयं की सुरक्षा के लिए किसी दूसरे की सहायता न लेनी पड़े। उन्हें स्वयं के ऊपर विश्वास करना पड़ेगा एवं अपने मान, सम्मान एवं स्वाभिमान के लिए स्वयं पुरुषार्थ करना पड़ेगा। बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक प्रवेश आर्या के नेतृत्व में एकता आर्या, आचार्या नर्मदा व आचार्या अनुसूया ने स्वयं सुरक्षा के गुर सिखाए। प्रशिक्षण के अन्तर्गत आर्य वीरांगनाओं को जूडो-कराटे, पी.टी के अतिरिक्त लाठी चलाने का अभ्यास सिखाया जा रहा है।

– ***मन्त्री***

आर्य समाज शादी खामपुर द्वारा 11 कुंडीय यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज शादी खानपुर द्वारा 14 जनवरी, 2021 को मकर सक्रांति पर्व के अवसर पर शादीपुर गांव की चौपाल के प्रांगण में 11 कुंडीय यज्ञ का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर करोलबाग जोन के चेयरमैन श्री तेजराम फोर जी भी उपस्थित रहे। सभी क्षेत्रवासियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। आचार्य शिवा चतुर्वेदी, दिनेश शास्त्री एवं रोहन शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया गया जिसमें प्रतिवर्ष मकर सक्रांति पर्व मनाने की बात कही।आर्यसमाज के प्रधान भीमसेन कामरा, मंत्री कृपाल सिंह, संजय चौहान, यशवन्त चौहान और समिति सदस्य सर्वश्री उदय जी, बृजेश जी, जितेंद्र जी, मंडल अध्यक्ष, श्री विवेक फोर जी, श्री भुपेंद्र सिंह फोर जी, श्री अतुल गोड जी व जितु जी इत्यादि महानुभाव उपस्थित रहें। – ***मन्त्री***

महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प के माध्यम से दिल्ली में स्थान-स्थान पर यज्ञ

दिल्ली सभा की ओर से संचालित महाशय धर्मपाल वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प के सम्वर्धकों द्वारा दिल्ली में स्थान-स्थान पर यज्ञों का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ में सम्मिलित लोगों को दैनिक यज्ञ करने की प्रेरणा प्रदान की जाती है।

बाल बोध

आदर्श विद्यार्थी के गुण

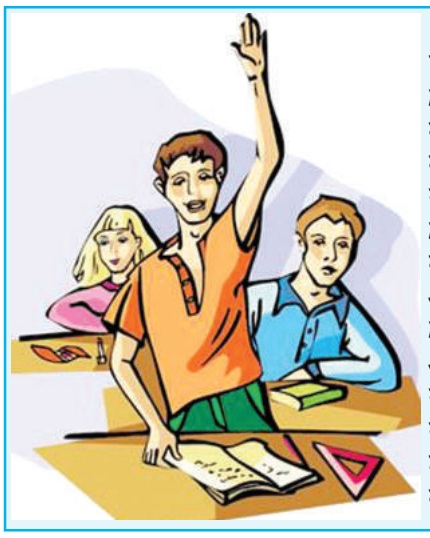

.....जीवन का प्रथम भाग प्राय: पच्चीस वर्ष की अवस्था तक विद्योपार्जन का काल है। विद्याध्ययन करने का यह स्वर्णिम काल है। भविष्य का श्रेष्ठ नागरिक बनने की क्षमता और सामर्थ्य अर्जित करने की बेला है। अत: विद्यार्थी को "विद्यारूपी अमृत के रस का आनन्द लेने के लिए, (विद्ययाऽश्नुते अमृतम्) जीवन-निर्वाह योग्य बनने के लिए आदर्श विद्यार्थी बनना होगा। आदर्श विद्यार्थी उत्तम विचारों का सञ्चय करेगा, क्षुद्र स्वार्थों और दुराग्रहों से मुक्त रहेगा। मन-वचन-कर्म में एकता स्थापित कर जीवन के सत्यरूप को स्वीकार करेगा।....

जीवन का प्रथम भाग प्राय: पच्चीस वर्ष की अवस्था तक विद्योपार्जन का काल है। विद्याध्ययन करने का यह स्वर्णिम काल है। भविष्य का श्रेष्ठ नागरिक बनने की क्षमता और सामर्थ्य अर्जित करने की बेला है। अत: विद्यार्थी को **"विद्यारूपी अमृत के रस का आनन्द लेने के लिए, (विद्ययाऽश्नुते अमृतम्) जीवन-निर्वाह योग्य बनने के लिए आदर्श विद्यार्थी बनना होगा।** आदर्श विद्यार्थी उत्तम विचारों का सञ्चय करेगा, क्षुद्र स्वार्थों और दुराग्रहों से मुक्त रहेगा। मन-वचन-कर्म में एकता स्थापित कर जीवन के सत्यरूप को स्वीकार करेगा।

विद्यार्थी का लक्ष्य है-विद्या प्राप्ति। विद्या-प्राप्ति के माध्यम हैं-आचार्य, गुरुजन या शिक्षक। इनसे विद्या-प्राप्ति के तीन उपाय हैं- नम्रता, जिज्ञासा और सेवा। गांधी जी प्राय: कहा करते थे-"जिनमें नम्रता नहीं आती, वे विद्या का पूरा सदुपयोग नहीं कर सकते।" सन्त तुलसीदास ने इसी बात का समर्थन करते हुए कहा है-**'यथा नवहिं बुध विद्या पाए।'** नम्रता समस्त सद्गुणों की जाननी है। विनम्र और सुपात्र छात्र में गुरु अपना प्रतिबिम्ब देखता है और अपनी समस्त ज्ञान की पूंजी प्रयास पूर्वक उसमें हस्तान्तरित करने में जुट जाता है।

जिज्ञासा तीव्र बुद्धि का स्थायी और निश्चित गुण है। जिज्ञासा के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता। पाठ्य-पुस्तकों, सद् साहित्य और सामान्य-ज्ञान के प्रति जिज्ञासा -भाव विद्यार्थी को विस्तृत और गहन अध्ययन की ओर प्रेरित करता है। **जिज्ञासा एकाग्रता की सखी है।** अध्ययन के समय विषय को समझने और हृदयंगम करने के लिए चित्त को एकाग्र करना अनिवार्य गुण है।

'सेवा से मेवा मिलता है।' No gain without pain- यह उक्ति सुप्रसिद्ध है।

गुरुजनों के आदेश का सहर्ष पालन कर, उनके सतत् सामीप्य और सेवा से आयु-विद्या-यश और बल की प्राप्ति की जा सकती है।

अभिवादनशीलस्य.....यशो बलम्।

सेवा से विमुख विद्यार्थी गुरु का कृपापात्र नहीं बन सकता। इसीलिए कहा गया है-

'गुरुशुश्रूषया विद्या पुष्कलेन धनेन वा।'

अर्थात् विद्या गुरु की सेवा से या गुरु को पर्याप्त धन देकर अर्जित की जा सकती है। संयमित आचरण विद्यार्थी का अनिवार्य गुण है। मुख्यत: खाने, खेलने और सोने में पूर्णत: संयम बरतना चाहिए। अल्पाहार और श्वान-निद्रा से सजगता और अप्रमाद बना रहता है। स्फूर्तिवान शरीर अधिक परिश्रम और स्वाध्याय करने में सहायक होता है। चाणक्य समझाते हैं-

अलसस्य कुतो विद्या?
कुतो विद्यार्थिन: सुखम्?
सुखार्थी वा त्यजेद् विद्याम्
विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम्।

सुख की चाह-विद्यार्जन में सबसे बड़ी बाधा है। Hard work is the key to success.

समय का सदुपयोग एक-एक क्षण की भी संभाल करना, अधिकाधिक स्वाध्याय करना। व्यर्थ की गप्पे हॉकने में निरुद्देश्य घूमने-फिरने, सिनेमा देखने, नायक नायिकाओं की चर्चा, पर निन्दा-स्तुति में अपना अमूल्य समय नष्ट नहीं करना योग्य विद्यार्थी का गुण है। कहा गया है- **क्षणे नष्टे कुतो विद्या?**

शेक्सपीयर ने भी लिखा है - "If you kill the time, time doeth kill you"

अत: विद्यार्थी अपने हाथों अपना विनाश न करे क्योंकि बीता समय फिर कभी वापिस नहीं आता।

सादा जीवन उच्च विचार,
यही है जीवन का श्रृंगार।

Simple Living and high thinking के सिद्धान्त का पालन विद्यार्थी के लिए अत्यन्त हितकारी है।

– ***शेष अगले अंक में***

हिन्दुओं के साथ कदम-कदम पर धोखा

जब आप खरीदारी करते हैं तो आप ये चेक करते हैं कि प्रोडक्टस असली हैं या नकली। कम्पनी भारतीय या विदेशी। इसके अलावा जब किसी प्रोडक्टस की कीमत बहुत आकर्षक लग रही होती है और एमआरपी की तुलना में 70-80 फीसदी का डिस्काउंट मिल रहा होता है तो आसानी से समझ आ जाता है कि कहीं ये आइटम नकली तो नहीं है। लेकिन जब प्रोडक्टस की दुनिया से बाहर आते है तो कदम कदम पर हिन्दू समाज के साथ धोखा हो रहा है इस धोखे पर हाल ही में पांचजन्य में एक विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित हुई है।

रिपोर्ट बताती है कि किस किस तरह मुसलमान कदम-कदम पर हिन्दू बनकर धोखा दे रहे है और हमें पता भी नहीं चल रहा है। गहराई से देखने पर चलता है कि यह सब एक षड्यन्त्र के अंतर्गत हो रहा है। अभी हाल ही में गाजियाबाद में दो ऐसे मुसलमान दुकानदारों का पता चला, जो हिंदू नाम से दुकान चला रहे थे। जिसका नाम है न्यू अग्रवाल पनीर भंडार इस दुकान का मालिक है मंजूर अली। दूसरी दुकान 'लालाजी पनीर भंडार' के नाम से है इसका मालिक ताहिर हुसैन है। इन दोनों का कहना था कि हिंदू नाम रखने से ग्राहक कम पूछताछ करते हैं और धंधा अच्छा चलता है, यानी ये धंधे के लिए हिंदुओं के साथ धोखा कर रहे थे। जब स्थानीय दुकानदारों ने इनका विरोध किया तो ये लोग अपनी दुकानों के नाम बदलने के लिए तैयार हो गए।

धोखे का एक दूसरा उदाहरण भी उत्तर प्रदेश से ही है, इसमें 25-30 साल के भगवा वस्त्रधारी कुछ युवा हिंदू घरों से भिक्षा मांग रहे हैं, ये लोग बहुत ही सफाई से देवी-देवताओं का नाम भी ले रहे हैं, लेकिन इनमें से एक यह बोलता दिख रहा है, विष्णु माई के नाम पर कुछ दे दो। जब विष्णु माई बोला तो कुछ लोगों को शक हुआ जब थोड़ी सख्ती की गई तो सच उगलने लगे, सभी मुसलमान थे।

ऐसे ही राजस्थान का एक वीडियो है, इसमें मौसिम नाम का एक लड़का दिखाई दे रहा है। उसने एक 'टी शर्ट' पहनी है, जिसके अगले हिस्से पर 'ब्राह्मण' लिखा हुआ है और फरसे का चित्र भी छपा हुआ है। इस 'टी शर्ट' को पहनकर वह हिंदू मुहल्लों में बेखटके घूमता था और स्कूल या कॉलेज जाने वाली लड़कियों को छेड़ता था। जब छेड़छाड़ की कई घटनाएं हुईं तो कुछ युवाओं ने एक दिन मौसिम को पकड़कर उससे पूछताछ की। वह भी अपने को हिंदू बताता रहा। कड़ाई से पूछने पर उसने भी सच बता दिया। उसने बताया कि 'ब्राह्मण' शब्द वाली 'टी शर्ट' इसलिए पहनी थी कि लोग उसे हिंदू ही मानें।

..... पिछले दिनों सोहेल नामक एक मुसलमान युवक ने रोहिणी इलाके में रहने वाली एक हिंदू लड़की को अपनी बहन के जरिए अपने प्रेमजाल में फंसाया। उस लड़की को धोखा देने के लिए सोहेल की बहन ने उसे अपना नाम 'प्रेरणा' बताया और अपने को हिंदू। दोस्ती जब कुछ अच्छी हो गई तो वह उस लड़की को अक्तूबर, 2020 में अपने घर ले गई। वहां उसके भाई ने उसके साथ जबरदस्ती की और निकाह के लिए दबाव बनाया। जब उसने ऐसा करने से मना कर दिया तो उसके साथ मार- पीट की गई। एक रपट के अनुसार इसमें सोहेल के मां-बाप भी शामिल थे। यानि पूरा खानदान जिहाद में लगा था हालाँकि अब सोहेल और उसके अब्बू को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है।

धोखे का एक और उदहारण आजकल दिल्ली की लाल बत्तियों पर आपको देखने को मिलेगा यहाँ हर एक बत्ती पर मुंह पर मास्क लगाये किन्नर देखने को मिलेंगे जिनमें बड़ी संख्या में मुस्लिम हैं जो सूट सलवार पहनकर आपको गाड़ियों मैं बैठे लोगों से पैसे मांगते दिखेंगे। इसके अलावा धोखे का एक बड़ा उदाहरण है दिल्ली का मालवीय नगर मालवीय नगर के पास खिड़की गांव है यहां अनेक घरों के बाहर 'आर्य समाज विवाह स्थल', 'आर्य समाज मैरिज मंडल' जैसे बोर्ड मिल जाएंगे। इनमें से कुछ केंद्र आर्य समाज की पद्धति से विवाह कराने का दावा करते हैं, तो कुछ इसकी आड़ में कन्वर्जन भी करा रहे हैं। इन केंद्रों के नाम से तो लगता है कि इनका संचालक कोई न कोई हिंदू होगा, लेकिन कई केंद्रों के संचालक मुसलमान हैं। लोगों का मानना है कि ये लोग निकाह भी कराते हैं। खास बात है कि इन केंद्रों के संचालकों में से बहुत सारे वकील भी हैं। पिछले दिनों कुछ हिंदू युवाओं को इस संस्था के बारे में जानकारी मिली तो उन्होंने छद्म नाम से एक लड़का और लड़की को वहां भेजा इनकी पोल खुली इसके बाद आर्य समाज की संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने इन संगठनों के विरुद्ध शिकायत दर्ज कराई दिल्ली उच्च न्यायालय में मुकदमा भी चल रहा है।

लव जिहाद में धोखे के उदाहरण रोज पढ़ने को मिल जाते हैं। इसमें कुवारें ही नहीं अब शादी शुदा मुस्लिम भी कूद गये हैं। पिछले दिनों हरियाणा के पलवल में तीन बच्चों के मुस्लिम बाप आरिफ ने हिन्दू बनकर एक लड़की के साथ शादी की और शादी के बाद अपनी सच्चाई बताई। इसके बाद लड़की धर्म परिवर्तन के लिए दबाव डाला, लेकिन जब उसने इनकार किया तो उसे जलाने की कोशिश भी की। साथ ही जब पीड़िता घर से भागी तो आरोपी ने अन्य मुस्लिम साथियों के साथ मिलकर गैंगरेप की वारदात को अंजाम दिया।

लव जिहाद के बाद अगर बात धार्मिकता की करें, तो इनका जाल बहुत अन्दर तक हमारे धार्मिक तंत्र में भी फैल चुका है। आपने 'आशु महाराज' का नाम सुना होगा। उसका असली नाम आसिफ मोहम्मद खान है। दो साल पहले उसकी धूर्तता पकड़ी गई। कभी साइकिल का पंक्चर लगाने वाले आसिफ मोहम्मद खान ने एक षड्यंत्र के अंतर्गत ज्योतिषी का आधा-अधूरा काम सीखा। इसके बाद वह अपना नाम आशु महाराज रखकर हस्तरेखा देखने का काम करने लगा। सहज और सरल हिंदुओं के भरोसे उसका यह काम चल पड़ा। इसी नाम से उसने हिंदुओं के बीच अपनी पैठ बनाई और कभी हस्तरेखा देखने के नाम पर, तो कभी किसी ग्रह को दूर करने के नाम पर खूब पैसा कमाया। बताया जाता है उसने दिल्ली के रोहिणी, हौजखास जैसे हिंदू इलाकों में मकान-दुकान लेकर अपने रिश्तेदारों को बसाया है। उसने सारी संपत्ति हिंदू नाम से ली है, पर उसका उपभोग मुसलमान कर रहे हैं। हिंदू नाम से मकान-दुकान खरीदने में उसे हिंदू मुहल्ले में कोई दिक्कत नहीं आई। यानी उसने भी अपनी कौम के लिए जिहाद ही किया। दो साल पहले उसकी असलियत तब सामने आई जब कुछ महिलाओं ने शिकायत की कि उनके साथ 'आशु महाराज' ने बलात्कार किया है। यानी आसिफ खान ने आशु बनकर पहले हिंदुओं को लूटा। लूट के पैसे से ही हिंदुओं की मकान-दुकान खरीदी, हिंदू नाम से ही हिंदू महिलाओं को अपने जाल में फंसाया। उनका यौन शोषण किया। बाद में जांच से पता चला है कि उसके सारे कागजात जैसे आधार कार्ड, पासपोर्ट और मतदाता पहचानपत्र आदि आसिफ खान के नाम से ही हैं, लेकिन हिंदुओं को धोखा देने के लिए उसने हिंदू नाम का सहारा लिया। हालाँकि इस धोखे के लिए आज वह जेल में है।

धोखे का एक और उदाहरण दिल्ली का ही है यहाँ मुस्लिम युवक तो हिन्दू बनकर लड़कियों के साथ जिहाद को अंजाम दे रहे हैं। साथ ही मुस्लिम लड़कियां भी पीछे नहीं हैं। पिछले दिनों सोहेल नामक एक मुसलमान युवक ने रोहिणी इलाके में रहने वाली एक हिंदू लड़की को अपनी बहन के जरिए अपने प्रेमजाल में फंसाया। उस लड़की को धोखा देने के लिए सोहेल की बहन ने उसे अपना नाम 'प्रेरणा' बताया और अपने को हिंदू। दोस्ती जब कुछ अच्छी हो गई तो वह उस लड़की को अक्तूबर, 2020 में अपने घर ले गई। वहां उसके भाई ने उसके साथ जबरदस्ती की और निकाह के लिए दबाव बनाया। जब उसने ऐसा करने से मना कर दिया तो उसके साथ मार-पीट की गई। एक रपट के अनुसार इसमें सोहेल के मां-बाप भी शामिल थे। यानि पूरा खानदान जिहाद में लगा था हालाँकि अब सोहेल और उसके अब्बू को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है।

ऐसे एक नहीं हजारों उदहारण आपको देखने को मिल जायेंगे लेकिन मीडिया इन मुद्दों से दूर रहता है और किसान आन्दोलन फलाना-ढिमका आदि मुद्दों पर बहस कराकर दिन निकाल देता है। जबकि इन घटनाओं से तो यही लगता है कि ये लोग जो कुछ कर रहे हैं, वह मजहबी उन्माद के तहत कर रहे हैं। ऐसा भी कह सकते हैं कि इस मकसद को पूरा करने के लिए किसी के साथ धोखा करना भी इनके मजहब में इनके लिए 'जायज' है ?

- राजीव चौधरी

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र

सत्य की राह

Vedic Path to Absolute Truth

मात्र 30/- रु.

हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें -
दिल्ली आर्य प्र. सभा, मो. 9540040339

महर्षि दयानंद गौ संवर्धन केंद्र गाजीपुर में मकर संक्रान्ति पर्व सम्पन्न

मकर सक्रांति का प्रेरक पर्व पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल एवं महर्षि दयानंद गौ संवर्धन केंद्र गाजीपुर द्वारा गौशाला के प्रांगण में उमंग, उत्साह और उल्लासपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ से कार्यक्रम का आरंभ हुआ। जिसमें कई गणमान्य महानुभाव सपत्नीक यजमान बनें और उपस्थित सैंकड़ों महानुभावों ने यज्ञ में आहुति दी। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री अशोक गुप्ता जी, श्री सुनहरी लाल यादव जी मंत्री, श्री हरि ओम बंसल जी संयोजक, श्री ऋषिपाल वर्मा जी कोषाध्यक्ष एवं गौशाला प्रबंधक श्री पृथ्वीपाल आर्य जी उपस्थित रहे।

Makers of the Arya Samaj : Pt. Guru Dutt ji

Continue From Last issue

This short life of Pt. Guru Dutt will be incomplete if it does not contain something about his habits and character. He was very irregular in his habits. He had no fixed time for doing anything. He went to bed when he liked and got up when be wanted. He had no fixed time for taking his meals or taking his exercise. Sometimes he slept for twenty-tour hours on end and sometimes he did not sleep for days. If he felt interested in a book, he sacrificed his sleep to finish it. Ifhe felt like taking a walk, he walked for many miles. But sometimes he would not stir out of his house for days together.

He was also careless about his food. Yet he never touched any intoxicant. Nor did he take any chillies. He had a great aversion to meat though b.e was very fond of vegetables. Once he lived on milk and biscuits for two months at a stretch.

He was equally careless about his dress. He never wore clothes for show, but simply for the protection of his body. Even in this matter he was not strict. Sometimes in winter he would be seen in very light clothes. On the other hand, he would wear warm clothes in summer. He would often go out without even a coat, and cover his body with only a blanket. He did not despise European dress. He was, indeed, fond of English trousers. He used to say that these were very helpful in an active life.

He never gave himself airs. He used to put on whatever clothes came to his hands. Many people thought that his dress was very clumsy, but he did not mind what they said. He loved cleanliness above everything. Once when he had no servant, he washed his clothes with his own hands. He did this for two months.

He was never in love with money. He never tried to hoard it. He spent most of what he earned on others. Never did a friend make a request for money to him in vain. Much of his money was spent on buying books. Whatever was left over was given away to needy students.

He was a very kindhearted man. He was specially good to those who were not his equals. He talked for hours with such persons. He knew how to adapt himself to the company of others. Amongst children he behaved like a child; while in the company of elders he was as serious as they. He was free from vanity and hated insincerity and hypocrisy. He did not believe in being polite merely for the sake of politeness.

He was very fond of exercise. He loved gymnastics and long walks. As long as he was in the Government College, he was a member of the cricket and football clubs. He was very particular about his bath. Every day, summer and winter, he would bathe twice a day with cold water.

There are many lessons that can be learnt from the life of Pt. Guru Dutt. We shall, draw attention to only a few ofthese. Excepting Swami Dayanand no member of the Arya Samaj has been so able and learned as Pt. Guru Dutt. He knew Western Science? Literature as well as Sanskrit and Indian philosophy. It was for this reason that he was called a Pandit, even though he was not born as such.

But what distinguished him more than anything else was his love of study. He used to call himself a Vidyarthi, which means a student. Panditji was a student in the real sense ofthe word. Even after passing his M.A. examination he did not give up his interest in books. He used to say that the real student life begins only when one has finished at school or college. It was for this reason that he began to study Eastern and Western philosophy after passing the M.A. examination.

But Pt. Guru Duttdid not use his knowledge for the sake of show or ornament. He did not use it even for getting a good position. He acquired knowledge for its own sake. All his life he was busy reading and writing. If ever he found any leisure, he

Meetings of condolence were held all over the province and many resolutions were passed. One of the papers wrote, "The whole Punjab is in mourning on account ofthe death of Pt. Guru Dutt. It is a pity that he should have been cut off so early in life. He was one of the leaders of the Arya Samaj and his loss is felt very keenly by every Arya Samajist. The deceased was a seeker after truth. He was a great scholar of Sanskrit. He was a man of restless activity and firm determination. He was a remarkable speaker and a fine debater. He was a man of spotless purity and was entirely free from deceit and vanity. He had a wonderful hold on people and his house was the meeting place of all kinds of men."

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

पृष्ठ 3 का शेष

चप्पे - चप्पे पर डॉक्टर

★ सुबह उठते ही दो-तीन गिलास पानी पीया करो।

★ हर आठवें दिन सुबह उठते ही थोड़ा नमक डालकर दो लीटर गुनगुना पानी पी जाओ और फिर खड़े होकर आगे झुकते हुए, गले में उंगली डालकर उस पानी की उल्टी कर दो। पेट में मौजूद सब एसिड वगैरा निकल जाएंगी और पेट ठीक हो जाएगा।

★ शाम को एक गिलास पानी में दो चम्मच त्रिफला डालकर रख दो। सुबह उठते ही उस पानी को पी जाओ और त्रिफले को खा जाओ। पेट की समस्या कभी नहीं रहेगी।

★ शाम को दूध के साथ दो-तीन चम्मच ईसब गोल ले लिया करो।

★ सप्ताह में एक दिन उपवास रखो।

पेट तो जब ठीक होगा तब होगा लेकिन नुस्खों की इस नोन-स्टॉप बौछार से मेरे सिर में दर्द शुरू हो गया था। मैं डर रहा था कि बाद में इन्होंने सिर दर्द के नुस्खे भी बताने शुरू कर दिए तो मेरी हालत गंभीर हो सकती है। लेकिन परोपकार कर्म में गहरी आस्था के कारण वे मेरे रोग को जड़ से खत्म करके ही दम लेना चाहते थे। उन्होंने नुस्खे दागना जारी रखा :

★ काली हरड़ घी में भूनकर चूर्ण बना लो और शाम को दूध के साथ सेवन करो।

★ सुबह-शाम भोजन के बाद झंडू पंचारिष्ट लिया करो।

★ मेथी, काली जीरी और सौंफ का समान भाग में चूर्ण बनाकर रोज रात्रि को पानी के साथ लो। चालीस दिन बाद असर दिखेगा लेकिन बीमारी जड़ से कट जाएगी।

इतने में ही हमारे पास से तेजी से चलता हुआ एक अधेड़ व्यक्ति दिखा, जो मेरा परिचित था। मुझे देखकर रुक गया और बोला - अंकल जी क्या मीटिंग चल रही है?

मीटिंग-वीटिंग कुछ नहीं, मैंने ही सुबह-सुबह आफत मोल ले ली है। ये कब्ज विशेषज्ञ भूखे भेड़ियों की तरह मेरा शिकार करने पर उतारू हैं।

अंकल जी, कब्ज का तो मैं अचूक इलाज जानता हूँ जो एक बड़े पहुँचे हुए गुरु ने मुझे बताया था। मुझे तो जब भी कब्ज होती है मैं देसी घी में तर-बतर चार-पाँच परांठी खा लेता हूँ। पेट के बेलन चिकने हो जाते हैं और जो भी पेट में पड़ा होता है उसे पेर देते हैं। पेट एक दम चिकना और साफ। आप भी यही नुस्खा आजमाइए। मुझ पर तीर की तरह अपने नुस्खे का आघात करते हुए वह जल्दी से आगे बढ़ गया। मैं ही नहीं, मेरे साथी भी, कब्ज का ऐसा पौष्टिक इलाज सुनकर गद्‌गद् हो गए। हमें लगा उस महामानव में स्वयं महर्षि चरक की आत्मा वास कर रही थी।

एक बार मेरे सिर में दर्द रहने लगा। मैंने अच्छे-से-अच्छे तंत्रिका विज्ञानियों (जिन्हें आप न्यूरोलॉजिस्ट कहते हैं) को दिखाया और उनके बताए सारे परीक्षण करवाए लेकिन रोग के कारण का पता नहीं चल पाया। कई परिचितों से इस स्थिति की चर्चा की तो उन्होंने जो नि:शुल्क परामर्श दिया वह कुछ इस प्रकार था:

★ ऐलोपैथी के चक्कर में मत पड़ो। इसमें पेटदर्द और सिरदर्द का कोई इलाज नहीं है। ये सिर्फ दर्दनाशक दवाएँ देना जानते हैं और तरह-तरह के परीक्षण करके पैसे बटोरते हैं। किसी अच्छे होम्योपैथ को दिखाओ। अगर दवा लग गई तो बीमारी जड़ से खत्म हो जाएगी।

★ मेरी मानो तो किसी अच्छे से नाड़िया वैद्य (नाड़ी छूकर रोग बताने वाला) से इलाज कराओ। थोड़ा समय जरूर लगेगा लेकिन बीमारी से हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाएगा।

★ मुझे भी सिर दर्द रहता था। मेरा तो ऐक्यूप्रैशर से ठीक हो गया।

★ एक्यूप्रैशर से तो एक्यूपंक्चर ज्यादा कारगर रहता है। चीन की पुरानी विद्या है।

★ सिर दर्द में जितना असर तिब्बती दवाएँ करती है उतना कोई दवा नहीं करती। मंदिर वाली बस्ती में एक बूढ़ा तिब्बती वैद्य है, उसके पास चले जाओ। इतनी सारे नि:शुल्क परामर्श सुनकर मेरा सिरदर्द बढ़ने लगा था। मैंने वहाँ से उठ जाने में ही अपनी खैरियत समझी।

मुझ में बीमारियाँ और भी बहुत हैं लेकिन उनकी चर्चा नहीं करूंगा। मुझे डर है कि कहीं आपने भी नुस्खे बताने शुरू कर दिए तो बीमारी से तो शायद बच जाऊँ लेकिन नुस्खों की मार से नहीं बच पाऊँगा। नुस्खों की मार न झेल सकने के कारण मैंने अपने सभी परिचितों को सूचित कर दिया है कि वे मेरी तबीयत खराब होने पर संवेदना प्रकट करने आ सकते हैं, बशर्ते कि उसके इलाज का कोई नुस्खा पेश न करें। -

एम 93, साकेत, नई दिल्ली-17
मो॰ 9818211771

संस्कृत वाक्य प्रबोध

गुरु शिष्य वार्तालाप प्रकरणम्

गतांक से आगे -

संस्कृत	हिन्दी
23. अष्टाध्यायीमहाभाष्यम्।	अष्टाध्यायी और महाभाष्य।
24. किमनेन पठितेन भविष्यति?	इसके पढ़ने से क्या होगा?
25. शब्दार्थसम्बन्धविज्ञानम्।	शब्द अर्थ और सम्बन्धों का यथार्थ बोध।
26. पुन: क्रमेण किं किमध्येतव्यम्?	फिर क्रम से क्या-क्या पढ़ना चाहिये।

27. शिक्षाकल्पनिघण्टुनिरुत्त छन्दो ज्योतिषाणि वेदानाम्न्गानिमीमांसा वैशेषिक न्याययोग सांख्यवेदान्तान्युपांगान्यायुर्धनुर्गान्र्ध्वार्थानुपवेदानैतरेय शतपथ साम गोपथब्राह्मणान्यधीत्य ऋग्यजुस्सामाऽथर्ववेदान् पठत।

शिक्षा, कल्प, निघण्टु, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष वेदों के अंग। मीमांसा, वैशेषिक न्याय, योग, सांख्य और वेदान्त उपांग आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्र्ध्ववेद, और अर्थवेद उपवेद। ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ ब्राह्मण ग्रन्थों को पढ़के ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद को पढ़ो।

28. एतत्सर्वं विदित्वा किं कार्य्यम्? इन सबको जानकर फिर क्या करना चाहिये?

29. धर्मजिज्ञासाऽनुष्ठाने एतेषामेवाऽध्यापनं च। धर्म के जानने की इच्छा तथा उसका अनुष्ठान और इन्हीं को सदा पढ़ाना।

क्रमश: - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

स्वप्न : साधक या बाधक

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

..... स्वप्नों के विषय में प्राचीन भारतीय दार्शनिक और पाश्चात्य विद्वानों ने अलग अलग चिन्तन किया है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक सिंगमण्ड फ्रायड का मानना है कि हमारे अवचेतन मन में जन्म- जन्मान्तर के संस्कार प्रसुप्त अवस्था में विद्यमान रहते हैं। जिन इच्छाओं को हमने दबा दिया है वे भी वहीं पर एक कोने में सुरक्षित रहती हैं। स्वप्नावस्था में मन इन इच्छाओं की पूर्ति कर तनाव से मुक्त हो जाता हैं। .....

जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति से शरीर की तीन अवस्थायें हैं। जाग्रत अवस्था में आत्मा मस्तिष्क में सभी ज्ञानेन्द्रिय, मन, बुद्धि के साथ सक्रिय बना रहता है। सुषुप्ति में आत्मा अपने सेवक ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय, मन, बुद्धि सहित हृदय में पुरीतत नाड़ियों में परमात्मा के सानिध्य में विश्राम करता है। स्वप्न अवस्था इनके मध्य की स्थिति है जिसमें शरीर एवं इन्द्रियां विश्राम करती हैं परन्तु मन चित्त में संग्रहीत संस्कारों का ताना-बाना बुनता है और आत्मा को भी साथ लेकर सुख-दु:ख की अनुभूति करता रहता है। रात्रि में विश्राम न मिलने के कारण मुख मुर्झाया हुआ और शरीर टूटने लगता है।

स्वप्नों के विषय में प्राचीन भारतीय दार्शनिक और पाश्चात्य विद्वानों ने अलग अलग चिन्तन किया है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक सिंगमण्ड फ्रायड का मानना है कि हमारे अवचेतन मन में जन्म-जन्मान्तर के संस्कार प्रसुप्त अवस्था में विद्यमान रहते हैं। जिन इच्छाओं को हमने दबा दिया है वे भी वहीं पर एक कोने में सुरक्षित रहती हैं। स्वप्नावस्था में मन इस इच्छाओं की पूर्ति कर तनाव से मुक्त हो जाता है। व्यक्ति की असलियत क्या है इसका ज्ञान उसके स्वप्नों से हो जाता है। ऊपर से चाहे वह समाज में कितना ही प्रतिष्ठित क्यों न हो।

हमें स्वप्न क्यों आते हैं?

अथर्ववेद (13/5/1) में स्वप्न आने के कारणों का वर्णन किया है-

विद्म ते स्वप्न जनित्रं ग्राह्यापुत्रोऽसि।

ग्राही का अर्थ पकड़ने वाली गांठ, कुण्ठा, अतृप्त इच्छा। मन में संचित वासना, कुण्ठा और अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति मनस्वप्न में करता है। इसी भांति निर्त्रवृति-दरिद्रता, महामारी, अभूति-निर्धनता, निर्भूर्ति -हानि, अभाव, नाश, पराभूति-पराजय और देवजामी-इन्द्रियों की अतृप्ति आदि अनेक कारण स्वप्न आने के बतलायें हैं। किसी प्रकार की चिन्ता, समस्या और अतृप्त इच्छायें ही अधिकांश में स्वप्नों के कारण हैं। आधुनिक मनोविज्ञान के अनुसार स्वप्नावस्था में मन स्मृतियों का संग्रह करता है। स्वप्न आना सीखने की प्रक्रिया का एक भाग है।

स्वप्न किसी सम्भावित घटना का भी संकेत करते हैं। आयुर्वेद के मतानुसार वात प्रकृति वालों को पक्षी की भाँति उड़ने के स्वप्न आते हैं। पित्त प्रकृति वाले अग्नि को देखते हैं और कफ प्रकृति वाले वर्षा, नदियां, समुद्र आदि के स्वप्न देखते हैं। शकुन देखने वाले स्वप्नों से ही अनेक घटनाओं का सम्बन्ध मानते हैं।

स्वप्न सभी को आते हैं परन्तु अधिकांश स्वप्नों का ज्ञान प्रात: काल तक नहीं रहता। प्रयोगों द्वारा यह देखा गया है कि जब कोई व्यक्ति निद्रावस्था में पुतलियों को घुमाता है या बड़बड़ाता है अथवा उसके मुख की भाव भंगिना बदलती हैं तो वह स्वप्न देख रहा होता है।

परीक्षणों से इस तथ्य का भी उद्घाटन हुआ है कि निद्रा का पहला चक्र दो घण्टे का ही होता है। इसके पश्चात् स्वप्न, करवट बदलना और निद्रा की आवृत्ति होती रहती है। प्रात: चार बजे के पश्चात् स्वप्नों की गति बढ़ जाती है। इसीलिये चार बजे प्रात: उठ जाने का विधान ऋषि मुनियों ने किया है।

- *शेष अगले अंक में*

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है।

वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा **आजीवन शुल्क** (मात्र दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें।

- *सम्पादक*

हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
10, 20 किलो की पैकिंग
प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें -
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली, मो. 9540040339

विश्व का पहला वेद आधारित लाइव टीवी चैनल

ARYA SANDESH TV एप को डाउनलोड करें। एप्प डाउनलोड करने के लिए लिंक पर जाएं -
https://bit.ly/34tP71p
वैदिक धर्म के सन्देश को विश्व में प्रसारित करने के लिए यह सन्देश अधिक से अधिक लोगों को फॉरवर्ड करें एवं एप्प डाउनलोड कराएं।

आवश्यक सूचना

शास्त्रार्थों के रोचक संस्मरण पुस्तक के संदर्भ में निवेदन

समस्त आर्यसमाजों के मान्य अधिकारियों, सदस्यों, कार्यकर्ताओं और आर्यजनों से निवेदन है कि पूज्य स्वामी जगदीश्वरानंद जी द्वारा लिखित पुस्तक शास्त्रार्थों के रोचक संस्मरण की प्रति अगर किसी महानुभाव के पास हो, तो कृपया उसकी फोटो प्रति अथवा मूल प्रति दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को भिजवाने की कृपा करें। यह पुस्तक कहीं मिल नहीं रही है और सभा इसका पुन: पकाशन कराना चाहती है। पुस्तक की प्रति भिजवाने के लिए यदि कोई शुल्क देय हो तो कृपया सूचित करें, सभा की ओर से भुगतान कर दिया जाएगा। कृपया पुस्तक/ प्रति **'महामन्त्री'** के नाम निम्न पते पर भेजें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

शोक समाचार

श्री जवाहर भाटिया जी को पुत्रशोक

आर्यसमाज दिलशाद गार्डन, दिल्ली के उप प्रधान श्री जवाहर भाटिया जी के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री सुमित भाटिया जी का दिनांक 26 जनवरी, 2021 को 39 वर्ष की अल्पायु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ सीमापुरी शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 31 जनवरी को दोपहर 2 से 4 बजे गौरीशंकर मन्दिर दिलशाद गार्डन में सम्पन्न होगी।

आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी जी को मातृशोक

आर्यसमाज के विद्वान आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी जी की पूज्यमाता श्रीमती मगनी देवी जी का दिनांक 20 जनवरी, 2021 को बिजनौर (उ.प्र.) स्थित उनके निवास पर निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ 21 जनवरी को बैराज घाट शमशान बिजनौर में किया गया।

श्री दौलत सिंह राणा जी का निधन

महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज एवं ऋषि परम्परा के अनन्य भक्त श्री दौलत सिंह राणा जी का 27 जनवरी, 2021 को 81 वर्ष की आयु में कोरोना संक्रमण से निधन हो गया। उनका जीवन वेदों से अनुप्राणित था। आर्यसमाज, तपोवन आश्रम तथा गुरुकुल पौंधा देहरादून से भी वह जुड़े रहे।

पं. सदानन रामनरायण जी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा त्रिनिडाड के पूर्व प्रधान, पुरोहित एवं कार्यकारी सदस्य पं. सदानन रामनरायण जी का 21 जनवरी, 2021 को निधन हो गया। वे त्रिनीडाड पण्डित परिषद और आर्य विद्यालय बोर्ड के महत्वपूर्ण सदस्य भी रहें। उनके निधन पर आर्य प्रतिनिधि सभा त्रिनीडाड के प्रधान श्री रोशन परशराम सिंह जी ने गहरा दु:ख व्यक्त किया है।

श्रीमती मालती दत्त जी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी के समर्पित निष्ठावान सम्मानित अधिकारी और कुशल नेतृत्व कर्ता के रूप में सदैव अग्रणी भूमिका का निर्वहन करने वाले पंडित भुवन दत्त जी "आर्य रत्न" की धर्मपत्नी श्रीमती मालती दत्त जी का 28 जनवरी, 2021 को निधन हो गया।

श्रीमती मलका बजाज जी का निधन

आर्यसमाज बिडला लाइन्स कमला नगर दिल्ली के प्रधान श्री संजीव बजाज जी की पूज्या माता श्रीमती मलका बजाज की का 21 जनवरी, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक विधि के साथ निगम बोध घाट पर सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा शनिवार 2 फरवरी, 2021 को सम्पन्न होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 25 जनवरी, 2021 से रविवार 31 जनवरी, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 28-29/01/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 27 जनवरी, 2021

गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथ धाम देवघर की बैठक सम्पन्न

दयानंद आर्य विद्यालय बुधा, आसनसोल (प.बंगाल) के परिसर में 18 जनवरी को गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथधाम देवघर झारखंड से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों पर निर्णय लेने व उसके क्रियान्वयन हेतु गुरुकुल प्रबंधकारिणी समिति की बैठक सम्पन्न हुई, जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, बंगाल, बिहार एवं झारखंड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभाओं के चुने हुए प्रतिनिधियों व कार्यकारिणी सदस्यों ने भाग लिया। इस गुरुकुल ने शताधिक वर्षों से बालकों को संस्कार-युक्त शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र-भक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसकी स्थापना वर्ष 1919 में देश के नौनिहालों को उत्कृष्ट सामयिक शिक्षा देकर शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आत्मिक उन्नयनकर राष्ट्र और समाज का सच्चा उपासक बनाने के निमित्त किया गया था। यह सम्पूर्ण पूर्वोत्तर भारत सहित नेपाल, म्यामार, भूटान आदि के प्रख्यात विद्वानों, प्राध्यापकों, राजनेताओं एवं उच्चाशय देशभक्त स्नातकों की कुल भूमि है।

- डॉ० अरविन्द कुमार वाजपेई, उपमंत्री,
गुरुकुल प्रबंधकारिणी समिति वैद्यनाथ धाम देवघर झारखंड।

प्रतिष्ठा में,

114 बार किया रक्तदान : महामहिम राज्यपाल गुजरात श्रद्धेय आचार्य श्री देवव्रत जी के 62वें जन्मदिवस पर आर्य परिवार द्वारा रक्तदान शिविर आयोजित हुआ, जिसमें 50 लोगों ने रक्तदान किया और श्री सत्य प्रकाश आर्य ने 114 वां रक्तदान आचार्य जी के सादर चरणों में समर्पित किया।

दयानन्द के ब्रह्मचारी

ये यज्ञ की सुगन्धि आई तेरे बदन से,
लाई जिसे हवि ने संसार के चमन से।

आंखों में ब्रह्मवर्चस चेहरे पे ब्रह्मवर्चस,
वाणी में ब्रह्मवर्चस प्राणों में ब्रह्मवर्चस।
हर अंग में भरा है वेदों का ब्रह्मवर्चस,
यज्ञीय है ये तन मन कर्तव्य है पवन से।

हर भाव है निराला हर बात है निराली,
हर यत्न है निराला हर चाल है निराली।
हर ज्ञान है निराला हर दृष्टि है निराली,
हर्षित हैं देव सारे बरसे कुसुम गगन से।

आदित्य की प्रभा से द्योतित हुआ है आलम,
वसु रुद्र ब्रह्मचारी लाये हैं स्वस्थ मौसम।
वैदिक प्रताप सबमें लक्षित समक्ष हरदम,
स्नातकवृन्द का जग स्वागत किया नमन से।

- धनञ्जय शास्त्री

खुशखबरी! खुशखबरी!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

के अन्तर्गत

वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित

वैदिक साहित्य

अब

amazon

पर भी उपलब्ध

अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें

https://amzn.to/3i3rKl7

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

जानिये एम डी एच देगी मिर्च की शुद्धता, गुणवत्ता और उत्तमता की

सच्चाई

यह मिर्च कर्नाटक में पैदा होती हैं। वहां पर लगभग 1000 औरतें पूरा दिन सिर्फ मिर्च की डंडी उतारने के काम में लगी रहती हैं। उसी मिर्च से देगी मिर्च तैयार होती है।

क्या आप लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला खाना चाहते हैं या बिना लकड़ी (डंडी) वाला मिर्च मसाला ?

लकड़ी (डंडी) बिना मिर्च मसाला शुद्धता और स्वाद के गुणों से भरपूर होता है। मसाला लगता भी कम है और स्वाद भी भरपूर आता है। क्योंकि बिना लकड़ी (डंडी) के मिर्च की शुद्धता 20% से भी ज्यादा और बढ़ जाती है। जबकि लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला लगता भी ज्यादा है और स्वाद भी नहीं आता है और तो और यह सेहत के लिये भी नुकसान दायक होता है।

आप खुद ही फैसला कीजिये कि आप कैसा मिर्च मसाला खाना पसंद करेंगे क्योंकि सवाल सिर्फ शुद्धता और स्वाद का ही नहीं आप की सेहत का भी है।

MDH मसाले सेहत के रखवाले असली मसाले सच –सच

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106-07-08

E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

ESTD. 1919

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह